संचार ब्रीफ्स

विज्ञान और समाचार: स्वास्थ्य व अनुसंधान संचार

ब्रीफ #13: ठिगनेपन (स्टंटिंग), दुबलेपन (वेस्टिंग), हल्केपन (अंडरवेट) से संबंधित सी.एन.एन.एस आंकड़े

परिभाषा, विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार

- **ठिगनापन** (स्टंटिंग)- यह उम्र के मुताबिक लंबाई कम होने की समस्या है, जो बच्चे के जीवन के शुरुआती 1000 दिनों के दौरान पोषण की अत्यंत कमी और लगातार संक्रमण की वजह से होती है।
- **दुबलापन** (वेस्टिंग)- यह ऐसी स्थिति है जिसमें लंबाई के मुताबिक बच्चे का वजन कम होता है। यह वजन में हाल ही में आई गंभीर कमी की वजह से होता है, हालांकि यह समस्या बहुत लंबे समय तक भी रह सकती है।
- **हल्कापन** (अंडरवेट या वजन कम होना)- ऐसे बच्चों का वजन उम्र के मुताबिक कम होता है। ऐसे बच्चे साथ ही ठिगने या दुबले या दोनों भी हो सकते हैं।
- **मोटापा:** ऐसे बच्चों के शरीर में असामान्य या अत्यधिक चरबी इकट्ठा होता है जो उनके स्वास्थ्य को नुकसान पहुंचा सकता है। इसमें लंबाई के मुताबिक बच्चे का वजन अधिक होता है (5 वर्ष से कम आयु के बच्चों के लिए) या उम्र के मुताबिक बी.एम.आई अधिक होता है (5 साल से अधिक उम्र के बच्चों, किशोरों और वयस्कों के लिए)।

कुपोषण के प्रकार और उनकी माप के पैमाने, भारत, कॉम्प्रिहैन्सिव नैशनल न्यूट्रिशन सर्वे (सी.एन.एन.एस) 2016-2018:

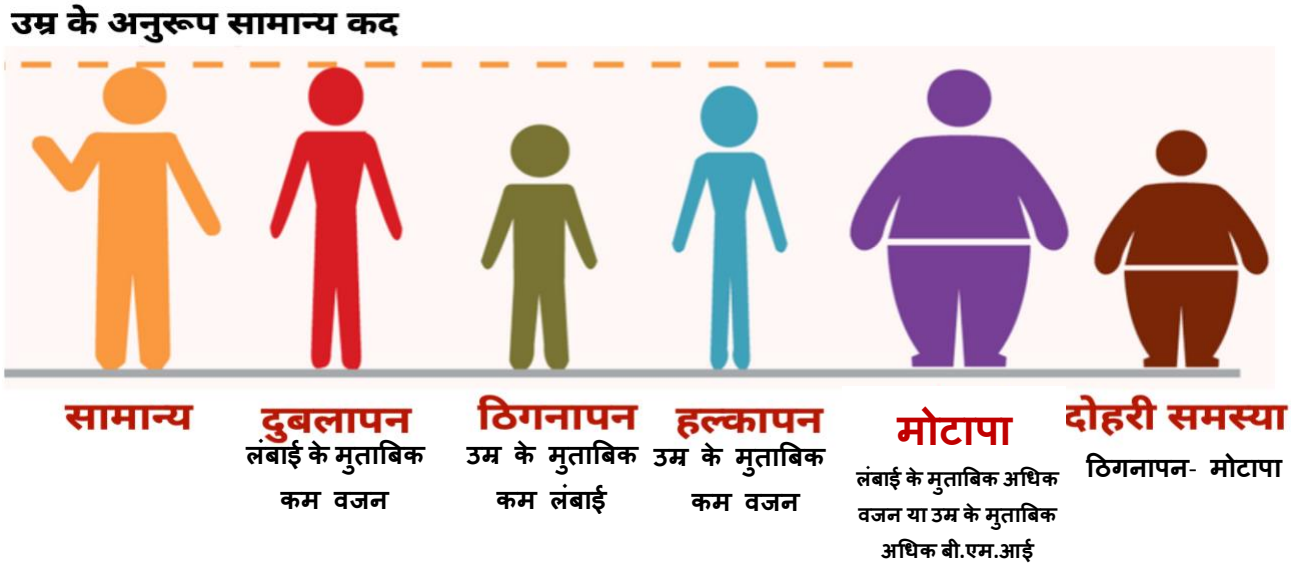

'पोषण अभियान'

भारत सरकार के राष्ट्रीय पोषण मिशन, **'पोषण अभियान'** के तहत कई लक्ष्य निर्धारित किए गए हैं:

- 0 से 6 साल तक के बच्चों में **ठिगनेपन** को प्रति वर्ष 2% की दर से कम करने का लक्ष्य
- 0 से 6 वर्ष के बच्चों में **हल्केपन** को प्रति वर्ष 2% की दर से कम करने का लक्ष्य
- 6 से 59 महीने के बच्चों और 15 से 49 साल की महिलाओं में **एनीमिया** को प्रति वर्ष 3 % की दर से कम करने का लक्ष्य

0 से 4 साल तक के बच्चों में ठिगनेपन, दुबलेपन, हल्केपन का प्रतिशत

(सी.एन.एन.एस 2016-18)

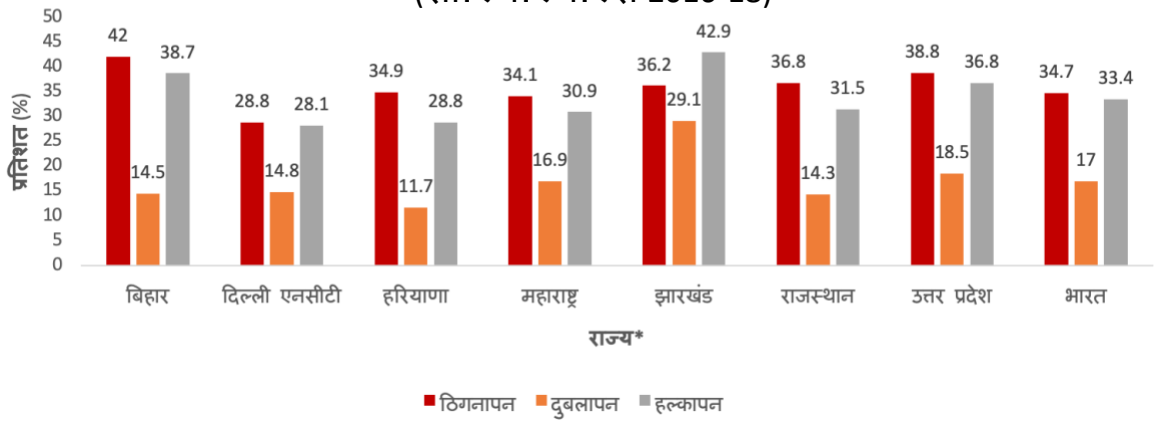

**प्रोजेक्ट संचार प्रशिक्षण में शामिल रहे पत्रकारों को ध्यान में रखते हुए राज्यों का चयन किया गया है।*

कॉम्प्रिहैन्सिव नैशनल न्यूट्रिशन सर्वे (सी.एन.एन.एस) 2016-2018, भारत के प्रमुख नतीजेः

0-4 वर्ष के

35%

भारतीय बच्चे ठिगने हैं

ग्रामीण इलाकों में ठिगनेपन का प्रचलन **37%** है

शहरी इलाकों में ठिगनेपन का प्रचलन **27%** है

सर्वाधिक **गरीबी वाली श्रेणी के बच्चों** (49%) में सर्वाधिक **अमीर श्रेणी के बच्चों** (19%) के मुकाबले ठिगनेपन का शिकार होने की आशंका अधिक होती है

ठिगनापन

0-4 वर्ष के

17%

भारतीय बच्चे दुबले हैं

ग्रामीण इलाकों में दुबलेपन का प्रचलन **17.6%** है

शहरी इलाकों में दुबलेपन का प्रचलन **16.3%** है

सर्वाधिक **गरीबी वाली श्रेणी के बच्चों** (21%) में सर्वाधिक **अमीर श्रेणी के बच्चों** (13%) के मुकाबले दुबलेपन का शिकार होने की आशंका अधिक होती है

दुबलापन

0-4 वर्ष के

33%

भारतीय बच्चे कम वजन के हैं

ग्रामीण इलाकों में हल्केपन का प्रचलन **36%** है

शहरी इलाकों में हल्केपन का प्रचलन **26%** है

सर्वाधिक **गरीबी वाली श्रेणी के बच्चों** (48%) में सर्वाधिक **अमीर श्रेणी के बच्चों** (19%) के मुकाबले हल्केपन का शिकार होने की आशंका अधिक होती है

हल्कापन

संदर्भ:

- स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय (एम.ओ.एच.एफ.डब्लू), भारत सरकार, यूनीसेफ और पोपुलेशन काउंसिल। 2019 व्यापक राष्ट्रीय पोषण सर्वेक्षण (सी.एन.एन.एस), राष्ट्रीय रिपोर्ट, नई दिल्ली
- विश्व स्वास्थ्य संगठन, कुपोषण फैक्टशीट, 2020। यहां उपलब्ध- https://www.who.int/news-room/fact-sheets/detail/malnutrition

यह आपके काम में कैसे मददगार होगा?

पत्रकार स्वास्थ्य और विकास संबंधी विषयों पर जागरुकता बढ़ाने में अहम भूमिका निभाते हैं। कुपोषण अपने सभी स्वरूपों में, चाहे वह ठिगनापन, दुबलापन या हल्कापन हो, बच्चों को ठीक नहीं हो सकने वाला शारीरिक और मानसिक नुकसान पहुंचाता है। कुपोषण व्यक्ति, परिवार, समुदाय और राष्ट्र के स्तर पर बहुत अधिक मानवीय और आर्थिक क्षति पहुंचाता है। साक्ष्य आधारित रिपोर्टिंग के माध्यम से पत्रकार ठिगनेपन, दुबलेपन या हल्केपन से बचने की रणनीति के बारे में जनता को सूचित कर सकते हैं।

प्रोजेक्ट 'संचार' का लक्ष्य लोक स्वास्थ्य के क्षेत्र में संचार के लिए साक्ष्य का उपयोग करने की क्षमता तैयार करना और इसे संबंधित लोगों की आदत में शामिल करवाना है। इसके लिए 'संचार' वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित स्रोतों से प्राप्त राष्ट्रीय स्तर के आंकड़ों को आंकता है और उन्हें आसानी से समझ आने लायक स्वरूप में उपलब्ध करवाता है।

HARVARD T.H. CHAN | SCHOOL OF PUBLIC HEALTH
India Research Center